11116CH11

एकादशः पाठः

# ईशः कुत्रास्ति

प्रस्तुत पाठ नोबेल पुरस्कार विजेता कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर की विश्वविख्यात कृति **गीताञ्जलि** के संस्कृत अनुवाद से संकलित है। इसमें कवि ने ईश्वर की वास्तविक सत्ता को किसानों, मज़दूरों और गरीबों में दर्शाया है। इसके अनुवादक को. ल. व्यासराय शास्त्री हैं।

**देवागारे पिहितद्वारे**
**तमोवृतेऽस्मिन् भजसे कम् ?**
**त्यज जपमालां त्यज तव गानं**
**नास्त्यत्रेशः स्फुटय दृशम्॥**

**तत्रास्तीशः, कठिनां भूमिं**
**यत्र हि कर्षति लाङ्गलिकः।**
**यत्र च जनपदरथ्याकर्ता**
**प्रस्तरखण्डान् दारयते॥**

**ईशस्तिष्ठति वर्षातपयो-**
**स्ताभ्यां सार्धं मलिनवपुः।**
**दूरे क्षिप तव शुद्धां शाटी-**
**मेहि स इव पांसुरभूमिम्।।**

**मुक्तिः? क्व नु सा दृश्या मुक्तिः!**
**सलीलमीशः सृजति भुवम्।**
**तिष्ठति चास्मद्धिताभिलाषी**
**सविधेऽस्माकं मिषन् सदा।।**

**ध्वानं हित्वा बहिरेहि त्वं**
**त्यज तव कुसुमं त्यज धूपम्।**
**पश्यंस्तिष्ठ स्वेदजलार्द्र-**
**स्तन्निकटे कार्यक्षेत्रे।।**

**यदि तव वसनं धूसरितं स्यात्**
**यदि च सहस्रच्छिद्रं स्यात्।**
**का वा क्षतिरिह तेन भवेत्ते**
**तत्त्वमिदं चिन्तय चित्ते।।**

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|---|---|---|
| **देवागारे** | – | देवस्य आगारे, देवमन्दिर में। |
| **पिहितद्वारे** | – | पिहितं द्वारं यस्य तत् तस्मिन्, बन्द दरवाजे वाले (में)। |
| **तमोवृते** | – | तमसावृते, अन्धकार से आच्छादित (में)। |
| **जपमालाम्** | – | जपाय मालाम्, मन्त्रादि के जपने की माला को। |
| **नास्त्यत्रेशः** | – | न + अस्ति + अत्र + ईशः, यहाँ ईश्वर नहीं है। |
| **स्फुटय** | – | खोलो। |
| **दृशम्** | – | दृष्टि (आँखें) को। |
| **तत्रास्तीशः** | – | तत्र+ अस्ति + ईशः, ईश्वर वहाँ है। |

| | | |
|---|---|---|
| **कर्षति** | – | हल चलाता है। |
| **लाङ्गलिकः** | – | हलवाहा। |
| **जनपदरथ्याकर्ता** | – | जनपदस्य रथ्यायाः कर्ता, जनपद की सड़क बनाने वाला। |
| **प्रस्तरखण्डान्** | – | प्रस्तराणां खण्डान्, पत्थरों के टुकड़ों को। |
| **दारयते** | – | तोड़ता है। |
| **ईशस्तिष्ठति** | – | ईशः + तिष्ठति। |
| **वर्षातपयोः** | – | वर्षा च आतपश्च वर्षातपौ तयोः, वर्षा और धूप में। |
| **मलिनवपुः** | – | मलिनं वपुः यस्य सः अर्थात् दीनः, मैलयुक्त शरीर वाला अर्थात् दीन। |
| **शुद्धाम्** | – | साफ़ (स्वच्छ)। |
| **शाटीम्** | – | साड़ी को। |
| **पांसुरभूमिम्** | – | धूलिधूसरित ज़मीन पर। |
| **सलीलम्** | – | लीलया सह, लीला (क्रीडा) के साथ। |
| **चास्मद्धिताभिलाषी** | – | च + अस्मद् + हित + अभिलाषी, अस्माकं हितस्य अभिलाषी, हमारा हित चाहने वाला। |
| **सविधे** | – | समीप में। |
| **मिषन्** | – | देखता हुआ। |
| **बहिरेहि** | – | बहिः एहि, बाहर आओ। |
| **पश्यंस्तिष्ठ** | – | पश्यन् + तिष्ठ, देखते रहो। |
| **स्वेदजलार्द्रः** | – | स्वेदजलेन आर्द्रः, पसीने से लतपथ। |
| **तन्निकटे** | – | तत् + निकटे, उसके समीप में। |
| **कार्यक्षेत्रे** | – | कार्यस्य क्षेत्रे, कार्य करने की जगह पर। |
| **वसनम्** | – | वस्त्र। |
| **सहस्रच्छिद्रम्** | – | सहस्राणि छिद्राणि यस्मिन् तत्, हजारों छिद्रों वाला (फटा-पुराना)। |
| **क्षतिः** | – | हानि। |
| **तत्त्वमिदम्** | – | तत्त्वम् + इदम्, इस तत्त्व को। |
| **चिन्तय** | – | विचार करो। |
| **चित्ते** | – | चित्त में (मन में)। |

## अभ्यासः

1. **संस्कृतभाषया उत्तरं दीयताम्।**

(क) ईशः कुत्रास्ति? इति पाठः कस्माद् ग्रन्थात्सङ्कलितः?

(ख) लाङ्गलिकः किं करोति?

(ग) प्रस्तरखण्डान् कः दारयते?

(घ) ईश्वरः काभ्यां सार्द्धं तिष्ठति?

(ङ) कविः जनान् कुत्र गन्तुं प्रेरयति?

(च) कविः किं चिन्तयितुं कथयति?

2. **''तत्रास्तीशः कठिनां भूमिं ·········· दारयते''। इत्यस्य काव्यांशस्य व्याख्या हिन्दीभाषया कर्तव्या।**

3. **रिक्तस्थानानि पूरयत।**

(क) अस्मिन् ·························· कं भजसे।

(ख) स्वेदजलार्द्रः ·························· तिष्ठ।

(ग) ध्यानं हित्वा ·························· एहि।

(घ) यदि तव ·························· धूसरितं स्यात्।

4. **अधोलिखितपदानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत।**

सार्द्धम्, सविधे, हित्वा, एहि, धूसरितम्, भवेत्।

5. **अधोलिखितेषु सन्धिं कुरुत।**

तमोवृते + अस्मिन् = ··················

ईशः + तिष्ठति = ··················

बहिः + एहि = ··················

6. **अधोऽङ्कितेषु सन्धिविच्छेदं कुरुत।**

नास्त्यत्रेशः = ··········· + ···········

पश्यंस्तिष्ठ = ··········· + ···········

तन्निकटे = ··········· + ···········

7. **ईशस्तिष्ठति ········· पांसुरभूमिम्, इत्यस्य श्लोकस्य अन्वयं लिखत।**

## योग्यताविस्तारः

( क ) पाठगतस्य आशयस्य स्थिरीकरणाय अधोलिखितसूक्तयः दीयन्ते

मनः क्षोभं न कस्यापि
प्रकुर्वीत कथञ्चन।
आर्तोच्छ्वासैर्हि दीनानां
जगत् सर्वं प्रणश्यति॥1॥

बद्धाञ्जलिपुटा भृत्या
वित्तेशान् समुपासते।
तेभ्यस्तु ते महीयांसः
कुर्वते ये श्रमार्चनम्॥2॥

सम्भरणेन दीनानां
विपदाशु विलीयते।
ह्रियन्तेऽदातृ - वित्तानि
हिंसकेर्दस्युभिर्बलात्॥3॥

दीनं प्रति घृणाभावः
कर्त्तव्यो न कदाचन।
कृपापात्रं स ते भक्तः
पापकर्मा भवन्नपि॥4॥

अशक्तमपि कार्येषु
अशक्तं मावगच्छ माम्।
समर्थ इति मत्वा मां
व्यवहारं कुरुष्व भोः॥5॥

( ख ) पाठस्य भावं चेतसि प्रवर्धनाय कानिचित् समभावगीतानि अपि श्राव्यसाधनैः श्रावयितव्यानि।